३४५-

सावन बरिस मेह अति पानी - - - - - -
किमि करि भेटौं कंत तोहि ना मोहि पाँव न पंख ॥

सावन में मेघों से खूब पानी बरसता है भरन पड़ रही है फिर भी मैं विरह में सूखती हूँ। पुनर्वसु लग गया। क्या प्रियतम ने उसे नहीं देखा चतुर प्रियतम कहाँ रहे, यह सोच-सोचकर मैं बावली हो गई। रक्त के आँसू पृथ्वी पर बिखर रहे हैं। वे ही मानों बीर बहूटियाँ रेंग रही हैं। मेरी सखियों ने अपने प्रियतमों के साथ हिंडोला डाला है। हरी भूमि देखकर उन्होंने अपना तन कुसुम्भी चोले से सजा लिया। है पर मेरा हृदय हिंडोले की तरह ऊपर नीचे हो रहा है। विरह झकोले देकर इसे झुला रहा है। बाट असूझ, अथाह, और गंभीर है। मेरा जी बावला हुआ भँभीरी की भाँति घूम रहा है। जहाँ तक देखती हूँ, संसार जल में डूबा है मेरी नाव खेवक के बिना ठहरी हुई है

पर्वत, अगम समुद्र, बीहड़ वन और ढाक के जंगल मेरे और प्रियतम के बीच में है हे प्यारे तुमसे कैसे मिलूँ? न मेरे पाँव है, न पंख।

343-

पाट मलाढेइ हिऍं न लाउ।
तपति मिरगिसिरा जे सहिहु श्रम ते पलहुंत॥

पइ मलादेवी हृदय में हारो नहीं, जी में समझो और चित्त में चैतन्य की रक्षा करो। और कमल के संग जाकर भी पराया नहीं होगा। पहले के प्रेम का स्मरण कर वह मालती के पास लौटेगा। प्रियतम रूपी स्वाति में तुम्हारी जैसी दृढ़ प्रीति थी, उससे प्यास को रोके रहो और मन में टेक बाँधे रहो। धरती जैसे आकाश के मेघ से स्नेह करती है तो वह भी लौटकर वर्षा ऋतु में उसे मेह से भर देता है। फिर नवेली वसन्त ऋतु आएगी। उस समय वही रस, वही भौंरा, वही बेल होगी। हे रमणी, तुम अपना चित्त ऐसा न करो। जले हुए वृक्ष भी फिर पल्लवित होकर उठ जाते हैं। दस दिन तक जल सूखा भी रहा तो क्या हानि है! पुनः वही सरोवर और वही हंस होगा। जो साजन बिछुड़ते हैं, वे फिर मिलते हैं और प्रफुल्लित भेंट और आलिंगन करते हैं। जो मृगशिरा की तपन सहते हैं, वे आर्द्रा में फिर हरे भरे हो जाते हैं।

344-

चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा - . . ---- -
कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्ब ।।

असाढ़ का महीना आ गया। मेघ आकाश में गरजने लगा। विरह ने युद्ध की तैयारी की है और उसकी सेना आ पहुँची है। धुमैले, काले, धौले बादल सैनिकों की भाँति गगन में दौड़ते लगे। बगुलों की पंक्तियाँ श्वेत ध्वजा सी दिखने लगी। बिजली चारों ओर तलवार सी चमकने लगी। मेघ बूँद रूपी बाणों की घनघोर वर्षा करने लगे। आर्द्रा लगते ही बिजली चमककर भूमि छूने लगी। हा मुझे प्रिय के बिना कौन आदर देगा। चारों ओर घटा झुक आई है। हे कन्त, मदन ने मुझे घेर लिया है, मुझे बचाओ दादुर, मोर, कोयल, पपीहे बेध रहे हैं, अब घर में प्राण न रहेगा। पुष्य नक्षत्र सिर ऊपर आ गया है मैं बिना स्वामी के हूँ। कौन मेरा मंदिर छवाएगा? जिनके घर कंत है, वे सुखी हैं, उन्हीं को गौरव और गर्व है मेरा प्यारा कन्त बाहर है इससे मैं सब सुख भूल गई हूँ।